बहन अल्योनुश्का और भाई इवानुश्का

एक था बुड्ढा और एक थी बुढ़िया। उनके थी एक बेटी अल्योनुश्का और एक बेटा इवानुश्का। बुड्ढा-बुढ़िया गए मर। बहन अल्योनुश्का और भाई इवानुश्का बिल्कुल अकेले रह गए।

अल्योनुश्का काम करने चली, साथ में भाई को भी ले लिया। रास्ता था लबा, खुले मैदान के पार, इवानुश्का को प्यास लग आई।

"बहना, मुझे प्यास लगी है।"

"ठहर जा, मेरे भैया, कुआं आएगा, तब पानी पी लेना।"

दोनों चलते गए, चलते गए। धूप थी तेज़, कुआं था दूर, गर्मी सही न जाए, पसीना बहता जाए। आगे थी गाय की खुरी, पानी से भरी।

"बहना, मैं खुरी का पानी पी लेता हूं।"

"मत पी, मेरे भैया, बछड़ा बन जाएगा।"

भैया कहना मान गया, दोनों आगे चल दिए।

धूप थी तेज़, कुआं था दूर, गर्मी सही न जाए, पसीना बहता जाए। आगे थी घोड़े की खुरी, पानी से भरी।

"बहना, मैं खुरी का पानी पी लेता हूं।"

"मत पी, मेरे भैया, बछेड़ा बन जाएगा।"

इवानुश्का मन मारकर आगे चलने लगा।

चलते गए, चलते गए। धूप थी तेज़, कुआं था दूर, गर्मी सही न जाए, पसीना बहता जाए। आगे थी बकरी की खुरी, पानी से भरी।

इवानुश्का कहने लगा:

"बहना, अब और नहीं रहा जाता, मैं खुरी का पानी पी लेता हूं, प्यास बुझा लेता हूं।"

"मत पी, मेरे भैया, मेमना बन जाएगा।"

इवानुश्का ने कहना नहीं माना, और खुरी का पानी पी लिया।

पानी उसने पी लिया और मेमना बन गया।

अल्योनुश्का ने भैया को आवाज़ दी, पर इवानुश्का की जगह सफ़ेद-सफ़ेद मेमना उसके पीछे दौड़ा आया।

अल्योनुश्का बेचारी की आंखें भर आईं, सूखी घास के गांज के पास बैठ गई और रोने लगी, मेमना उसके इर्द-गिर्द उछलने कूदने लगा।

तभी एक सौदागर उधर आ निकला।

"रोती क्यों हो, सुंदरी?"

अल्योनुश्का ने उसे अपना दुखड़ा सुनाया।

सौदागर कहने लगा:

"तुम मुझसे शादी कर लो। मैं तुम्हें सोने-चांदी से लाद दूंगा, मेमना भी हमारे साथ रहेगा।"

अल्योनुश्का सोचती रही, सोचती रही, फिर राज़ी हो गई।

वे दोनों खुशी-खुशी रहने लगे, मेमना भी उनके साथ रहता था, अल्योनुश्का के साथ एक ही प्याले में से खाता-पीता था।

एक बार सौदागर कहीं बाहर गया। तभी न जाने कहां से एक चुड़ैल आ गई, अल्योनुश्का से मीठी-मीठी बातें करने लगी, उसे नदी पर नहाने चलने को कहने लगी।

चुड़ैल अल्योनुश्का को नदी पर ले आई, फिर झपटकर उसके गले में पत्थर बांध दिया और उसे नदी में फेंक दिया।

चुड़ैल ने अल्योनुश्का का रूप धर लिया, उसके कपड़े पहन लिए और उसके घर आ गई। कोई चुड़ैल को पहचान नहीं सका। सौदागर जब लौटा, तो वह भी नहीं पहचान सका।

अकेला मेमना ही सारी बात जानता था। वह सिर लटकाये रहता, न कुछ खाता, न पीता। सुबह शाम नदी पर जाता और किनारे पर खड़ा होकर पुकारता।

"अल्योनुश्का, मेरी बहना!
निकला आ, बाहर निकल आ..."

चुड़ैल को यह पता चल गया, और वह सौदागर के पीछे पड़ गई कि मेमने को काट डालो।

सौदागर को मेमने पर तरस आता था, उसे मेमना प्यारा लगता था। पर चुड़ैल ने ऐसी रट लगाई कि सौदागर को हारकर उसकी बात माननी पड़ी:

"अच्छा, काट डालो।"

चुड़ैल ने नौकरों को हुक्म दिया: बड़े-बड़े अलाव जलाओ, लोहे के कड़ाहे तपाओ, फौलादी चाकू तेज़ करो।

मेमने को पता चल गया कि अब वह बचेगा नहीं, तब उसने सौदागर से कहा:

"मरने से पहले मुझे एक बार नदी पर हो आने दो। मैं पानी पी लूंगा, अंतड़ियां साफ़ कर लूंगा।"

"जा, चला जा।"

मेमना दौड़ा-दौड़ा नदी पर गया, तट पर खड़ा हो गया और पुकारने लगा:

"अल्योनुश्का, मेरी बहना!
निकल आ, बाहर निकल आ!
बड़े-बड़े अलाव जले हैं,
लोहे के कड़ाहे तपे हैं,
फौलादी चाकू तेज़ करते हैं,
मुझे काटना चाहते हैं।"

नदी में से अल्योनुश्का ने उसे जवाब दिया:

"मेरे भैया, इवानुश्का!
पत्थर भारी नहीं छोड़ता,
रेशमी घास से पांव बंधे हैं,
छाती रेत में दबी है!"

उधर चुड़ैल मेमने को ढूंढ़ रही थी – कहीं नहीं मिला, तो उसने नौकर को भेजा:
"जा, मेमने को ढूंढ़ कर ला।"
नौकर नदी पर गया, देखता क्या है – तट पर मेमना खड़ा है और पुकार रहा है:

"अल्योनुश्का, मेरी बहना!
निकला आ, बाहर निकल आ!
बड़े-बड़े अलाव जले हैं,
लोहे के कड़ाहे तपे हैं,
फौलादी चाकू तेज़ करते हैं,
मुझे काटना चाहते हैं।"

और नदी में से जवाब आ रहा है:

"मेरे भैया, इवानुश्का!
पत्थर भारी नहीं छोड़ता,
रेशमी घास से पांव बंधे हैं,
छाती रेत में दबी है।"

नौकर दौड़ा-दौड़ा घर गया। नदी पर उसने जो कुछ सुना था, सब सौदागर को बताया। लोग जमा हो गए, नदी पर गए, रेशमी जाल डाला और अल्योनुश्का को नदी में से निकाला। उसके गले से पत्थर उतारा, चश्मे के पानी में उसे नहलाया, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाए। अल्योनुश्का जी उठी और पहले से भी अधिक सुंदर हो गई।

मेमने ने खुशी के मारे तीन बार कलाबाजियां खाईं और वह इवानुश्का लड़का बन गया।

दुष्ट चुड़ैल को घोड़े की पूंछ से बांधा और घोड़े को खुले मैदान में दौड़ा दिया।

बहन अल्योनुश्का और भाई इवानुश्का

रूसी लोक कथा

अनुवादक: योगेन्द्र नागपाल

चित्रकार: तत्याना शेवार्योवा